हिंदी कविता

समय का शाब्दिक दस्तावेज

डॉ. नवीन नन्दवाना

हिंदी कविता
समय का शाब्दिक दस्तावेज
डॉ. नवीन नन्दवाना

मलिक एण्ड कम्पनी
(स्थापित 1950)
337, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302 003
प्रधान कार्यालय
23, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

ISBN 978-81-7998-204-4

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

ISBN 978-81-7998-204-4
प्रथम संस्करण : 2018
© लेखकाधीन

मूल्य : ₹ 295

प्रकाशक
मलिक एण्ड कम्पनी
337, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302 003
फोन : 0141-2575258, 2575254
ई-मेल : malikbooks337@yahoo.in

टाइप सैटिंग
नेशनल कम्प्यूटर्स, जयपुर

मुद्रक
विशाल कौशिक प्रिन्टर्स, दिल्ली

प्राक्कथन

कविता मनुष्य के हृदय की सबसे निकटस्थ विधा है। बच्चा माँ की लोरी से ही कविता से जुड़ता है। यदि बात हिंदी कविता की हो तो कहा जा सकता है कि हिंदी कविता ने आज तक बहुत लंबी यात्रा तय की है। सरहपा की वाणी जो कि हिंदी कविता का एक महत्त्वपूर्ण प्रस्थान बिंदु मानी जाती है, वहाँ से प्रारंभ होकर कई पड़ावों से गुजरते हुए यह कविता रूपी सरिता कई स्थानों को स्पर्श करती हुई सतत् रूप से प्रवाहमान है।

हिंदी साहित्य के आदिकाल में इस कविता ने सिद्ध-जैन-नाथों की वाणी बनकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, वहीं रासो साहित्य की गूँज-अनुगूँज से समस्त आदिकाल गुंजायमान रहा है। लौकिक रस रचनाएँ लिखकर विद्यापति और खुसरो आदि कवियों ने कविता को जनमन से जोड़ा। मैथिल कोकिल विद्यापति की पदावली तो युवाओं का कंठहार सिद्ध हुई। भक्तिकाल, जिसे हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है, अपनी साहित्यिक श्रेष्ठता के कारण आज भी इस काल का साहित्य अपना विशेष महत्त्व रखता है। कबीर, नानक, दादू, रैदास और सुंदरदास आदि संत कवियों की वाणी ने श्रेष्ठता व सहजता के साथ हिंदी कविता को अभिव्यक्ति किया ही, साथ ही इनकी रचनाओं ने समाज सुधार की दिशा में भी अपनी महती भूमिका निभाई। जायसी आदि सूफी कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रेम तत्त्व को प्रमुखता देते हुए ईश्वर प्राप्ति का पथ प्रदर्शित किया। राम और कृष्ण भक्तिधारा के कवियों विशेषतः गोस्वामी तुलसीदास और सूरदास के अंतस् से जो वाणी फूटी उसकी उपस्थिति आज भी प्रत्येक भारतीय के हृदय की धड़कन में महसूस की जा सकती है। तुलसी और सूर ने अपने आराध्य की जो छवि अपनी कविता में वर्णित की लगभग वही छवि प्रत्येक भारतवासी अपने हृदय में उसी रूप में संजोये है। रीति कवियों आचार्य केशवदास, चिंतामणि, भिखारीदास, देव और बिहारी के साथ-साथ रीतिमुक्त कवियों विशेषतः घनानंद की कविता ने जो रसधारा प्रवाहित की उसकी महक आज भी विद्यमान है।

आधुनिक काल में हिंदी कविता को भारतेंदु हरिश्चंद्र, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, अज्ञेय, रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि ने एक नूतन दिशा प्रदान की। इन कवियों की कविताओं ने हिंदी कविता की जनपक्षधरता सिद्ध की। कविता के विषय अब आम जनजीवन के साथ जुड़ने लगे। धर्मवीर भारती द्वारा रचित 'अंधा युग' तो 'अतीत के पट पर वर्तमान का चलचित्र' सिद्ध हुआ। राजस्थान की धरा के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर कवि नंदकिशोर आचार्य ने अपनी कविता के माध्यम से हिंदी कविता के क्षेत्र में विशिष्ट ख्याति अर्जित की। यदि हम समकालीन हिंदी कविता की बात करें तो कहा जा सकता है कि आज की हिंदी कविता में हमारा समय बोलता है। वह हमारे आज के जनजीवन के हर छोटे-बड़े विषय को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करती है। यह समकालीन कविता आमजन के हृदय में छिपे सुख-दुख के भावों का गान है। उनके दुख-दर्द, हास-विलास, पीड़ा और चिंताओं की अभिव्यक्ति है। हमारे समय का एक प्रकार से शाब्दिक दस्तावेज है।

हिंदी कविता की यात्रा बहुत लंबी है। किसी एक पुस्तक में उसके विस्तृत फलक को समेटना एक दुष्कर कार्य है। प्रस्तुत पुस्तक में हिंदी कविता के उन्हीं विविध पड़ावों में से कुछ पड़ावों पर ठहरते हुए उनका आकलन ही यहाँ अभिप्रेत रहा है। हिंदी कविता रूपी इस वृहद् एवं सुगंधित पुष्पगुच्छ में से कुछ चुनिंदा पुष्पों की महक को पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। हमारी समृद्ध काव्य-परम्परा के वैभव व विकास के विविध स्थलों से गुजरते हुए समकालीन कविता की समकालीनता के मूल्यांकन को यहाँ दृष्टि में रखा गया है। आशा है पुस्तक हिंदी पाठकों, विद्यार्थियों व शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकेगी।

पुस्तक के प्रकाशन के लिए राजस्थान साहित्य अकादमी ने प्रकाशन सहयोग प्रदान किया। अतः मैं राजस्थान साहित्य अकादमी के माननीय अध्यक्ष डॉ. इंदुशेखर तत्पुरुष और अकादमी परिवार के प्रति विशेष रूप से आभारी हूँ।

डॉ. नवीन नंदवाना

अनुक्रम

आदिकालीन शृंगारिक कविता और विद्यापति	1
हमारा समय और संत साहित्य	9
राजस्थान का संत-साहित्य	15
जनमानस को आलोकित करता 'मानस'	23
मीरा की कविता : भक्ति और लोकजीवन	29
हिंदी कविता में स्वाधीनता की चेतना	38
संस्कृति संवाहक कवि निराला	44
जनमन के कवि नागार्जुन	50
'अंधा युग' अतीत के पट पर वर्तमान का चलचित्र	60
दिनकर के काव्य में भारतीय संस्कृति	65
कवि नंदकिशोर आचार्य : नई सदी का आलोक	76
प्रभा खेतान की कविताओं में स्त्री	85
हमारा समय और हिंदी कविता	91
हिंदी कविता में प्रशासनिक संस्कृति	99
हिंदी कविता में वंचित समुदाय	111
समकालीन कविता की जनपक्षधरता	118

294